8.12.67

बच्चों को समझ मिली है जो कुछ सुनते हैं उस पर विचार चलाने की। बच्चे समझते हैं कि हम तो शिवबाबा के साथ हैं। लौकिक बाप के साथ होने लिए यह गीत नहीं गा सकते हैं। ज्ञान सागर बाप के साथ ....यह उनकी ही महिमा है। यह है पढ़ाई ;परंतु इसको बरसात नाम क्यों दिया है?क्योंकि आग को बुझाने के लिए पानी जरूर चाहिए होता है। तो यह कामाग्नि है ना। उसको बुझाने लिए ही यह ज्ञान बरसात चाहिए। अब तुम बच्चों पर वर्षा हुई है। जो बाप का बने हैं उन पर ही तो वर्षा होगी ना। बाप का ही नहीं बनेंगे तो ज्ञान बरसात कहां से आवेगी?पहले तो यह बाप जो कि ज्ञान का सागर है उनका परिचय देना है। कृष्ण को पिया नहीं कहा जाता है। ज्ञान सागर को ही पिया कहा जाता है। जो भी धर्म वाले हैं सभीको तुम जानते हो। ऐसे कोई नहीं कहेंगे कि हमारा धर्म है ही नहीं। फिर तो हिंदू भी क्यों कहलाना चाहिए? हिंदुस्तान में रहने कारण ही धर्म भी हिंदू ही कह दिया है। धर्म को माने तो सभी चीजों को माने। ल.ना. आदि के मंदिर बनाते हैं तो गवर्मेंट भी तो मदद करती है ना। रामलीला आदि करते हैं तो कितने पैसे आदि खर्च करते हैं। धर्म को मानने वाले भी हैं तो नहीं मानने वाले भी हैं। यह बाप जो कि आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं वो ही समझाते हैं। तुम अपने धर्म को भी जानते हो। धर्म स्थापक को भी जानते हो। मनुष्यों को तो यह पता नहीं है कि आदि सनातन देवी धर्म की स्थापना कोई शिवबाबा .... करते हैं यह और कोई भी नहीं जानते हैं। तुम्हारे इस गोले में लिखा हुआ है आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन करने वाला परमपिता परमात्मा शिवबाबा है। गीता पर भी लिखते हो कि त्रिमूर्ति शिव परमात्मा की गीता। बाप की गीता गाई हुई है ना कि बच्चे की। अब बाप तो है निराकार। वो ही है उंच ते उंच। उनको तो नम्बरवन में भी नहीं कहेंगे। नम्बरवन से भी उंचा है। उनके उपर नहीं नम्बर लगा सकते हैं। अगर पहले नम्बर में आवे तो फिर तो उनको 84के चक्र में भी आना पड़े। भगवान है ही एक, जो इस 84के चक्र का नालेज बैठकर सुनाते हैं। नम्बरवन विश्व का मालिक तो इन ल.ना. को ही कहा जाता है। शिवबाबा को नहीं कहेंगे। वो तो एक से भी दूर है। वो गिनती में नहीं आते हैं। गिनती में 84जन्म लेने वाला आता है। भल शिवबाबा इनमें आते हैं तो भी जन्म नहीं गिने जावेंगे। भल शिवजयंती मनाते हैं ;परंतु यह तो गिनती में नहीं आ सकते हैं। 108दाने गिने जाते हैं ना। 109 हो तो फिर तो उनमें ही एक यह भी आ जावे ; परंतु नहीं। यह प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग न्यारा है। बाप कहते हैं कि मैं तो एक ही हूं। गिनती में तो वो ही आते हैं, जो कि चक्र में आते हैं। मैं तो आता ही हूं सिर्फ पतितों को पावन बनाने। पावन बनाने वाला तो जरूर चाहिए ही ना। तुम बच्चे जानते हो कि दुनियां पावन थी। आदि सनातन ल.ना. का राज्य था। दुनियां भर में कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं होगा जिनकी बुद्धि में कि यह बातें हों। तुम्हीं जानते हो। 2500वर्ष तो इन ल.ना. वा देवी देवताओं का ही राज्य था। .....रहे 2500वर्ष। बाबा के पास आते हैं कहते हैं कि बाबा 5000वर्ष पहले भी हम आपसे मिले थे। बाबा आप पर हम ही 5000वर्ष पहले भी कुर्बान हुए थे। अब फिर हम आये हैं। कुर्बान जावें यह .....जो कि जन्मजन्मांतरों की थी वो अब पूरी हो रही है। बाबा आप फिर आवेंगे तो आपसे हम जरूर ;वर्षाद्ध लेंगे। बच्चे ही तो वर्से के हकदार बनते हैं ना। हर एक जो भी जिस धर्म के हैं उनके ही .....हैं। तुम बेहद के बाप से वर्सा लेते हो। तीन बाप इकट्ठे होते हैं तभी तुमको वर्सा मिलता है। और कोई .....ऐसा तो होता नहीं है। क्रिश्चियन करके क्राइस्ट का वर्सा लेंगे। वो लोग तो अपने धर्म पर बहुत पक्के होते हैं। कोई2.....सीखने के लिए आते हैं। सन्यासी भले क्रिश्चियन को ले आते हैं ;परंतु वो कोई अपनाए धर्म नहीं छोड़ते हैं। सिर्फ आकर देखते हैं कि किसने प्राचीन राजयोग सिखाया था। उस समय ही तो सारे विश्व में शांति स्थापन हुई थी। यह भी किसी को पता नहीं है। सारे विश्व में शांति तो तभी ही हो जबकि सभी परमधाम में हों। प्रलय माना ही शांति ;परंतु प्रलय तो होती ही नहीं है। शास्त्रों में दिखाया है

कि प्रलय हुई। .....पांडव और एक कुत्ता बचा। यह जैसे कि एक कहानी बना दी है। बाबा मिसाल देते हैं। समझो यह बच्चा है ,मानता है कि मैं आगे आदि सनातन देवी देवता धर्म का था। फिर ड्रामा अनुसार मैं अपने धर्म को भूलकर हिंदू कहलाने लगा। अब फिर बाप का बना। पवित्र भी बनते हैं। समझो यह शिवबाबा को याद करना छोड़ कर क्राइस्ट को याद करने लग जाता है। फिर इनकी वो पहले वाली समझ तो चली ही गई ना। देवी देवता धर्म तो सभी से अच्छा है। यह क्रिश्चियन धर्म तो थर्ड ग्रेड वाला है। हम अगर क्राइस्ट को मानेंगे फिर तो स्वर्ग में आ ही नहीं सकेंगे। गोया स्वर्ग को लात मार देते हैं। अच्छा ,फिर कोई मुसलमान बन जाते हैं। ऐसे होता तो बहुत ही है ना। बाबा ने भी 12गुरू किये है ना। कोई राधास्वामी पंथ का बन जाते हैं। अभी हम जानते हैं कि हम तो स्वर्ग में जाने वाले हैं। राधा स्वामी के तो वह पिछाड़ी में आने वाले हैं। स्वर्ग में तो जा ही नहीं सकेंगे। फिर स्वर्ग की स्थापना करने वाले को याद भी कैसे करेंगे? ऐसे तो नहीं है ना कि सभी को याद करने लग जावेंगे। वो तो फिर भक्ति भी व्यभिचारी हो जाती है। सभी भक्त व्यभिचारी नहीं होते हैं। राधास्वामियों के होंगे तो उनको ही मानेंगे। सन्यासी अपने सन्यास धर्म को ही मानेंगे। एक धर्म को पकड़ना चाहिए। नहीं तो आखरीन समझ में ही नहीं आता है कि किस झाड़ की चिड़िया है। कोई2 तो ऐसे हैं कि क्राइस्ट को वा साईंबाबा को ही याद करने लग जाते हैं। मुसलमान वो भी मुहम्मद ....के पीछे आया है। ईस्लामी धर्म तो अलग है। मुहम्मद को तो अभी ही थोड़ा समय हुआ है। तो अब उनको भी याद करते हैं तो दूसरे को भी याद करते हैं। एक को याद किया तो फिर तो दूसरा धर्म वाला भूल जाना चाहिए ना। एक को ही पकड़ना चाहिए। तीनों/चारों धर्मों में तो आवेंगे ही नहीं। जो आता है उन्हीं को गुरू बना लेते हैं। फिर वर्सा तो पा नहीं सकेंगे। वो तो भक्ति की लाइन में आ जाते हैं। ज्ञान की लाइन में नहीं। यहां पर भी बीज बोया तो वहां पर भी बीज वो लेते हैं। क्रिश्चियन्स के पादरी आदि आते हैं तो भी वो पण्डित आदि तो इकट्ठा करते ही हैं ना। तो उनको भी देते हैं। .....उनके पास पैसे तो ढेर हैं। उससे ही खर्चा करते हैं। जास्ती भीख नहीं मांगते हैं। अब तुम लोगों को तो परवाह ही नहीं है। तुमने तो एक ही बाप को बनाया है। वो तीनों ही है। तुम्हारी तो बातें ही बिल्कुल ही न्यारी हैं। सबसे उंच बहुत सुख देने वाला धर्म को भूल दूसरे/तीसरे में जाना गोया बाप के वर्सा को छोड़ दिया ;परंतु फिर भी थोड़ा–बहुत ज्ञान सुना है तो उनका विनाश नहीं होता है। आवेंगे जरूर। याद की यात्रा में नहीं रहते हैं इसलिए पाप विनाश नहीं होते। पाप और ही बनते जाते हैं। जन्म जन्मांतर के सब पाप रह जावेंगे। पाप करते भी रहेंगे तो जमा हो जावेगा। जमा और नाई होती है ना। दो चौपड़ी रखे जाते हैं। थोड़ा2 करके कला उतरती तो है ना। सीढ़ी तो जरूर नीचे उतरेंगे। यह तो समझ की बात है। कोई न भी समझे तो आपस में भी पूछ सकते हैं। अगर बाप से पूछने में लज्जा होती है तो आपस में भी पूछ सकते हैं। न समझ में आता है तो बाप के पास आना चाहिए। फिर उपर से भी पूछा जाता है। वास्तव में तो कुछ भी पूछने की रहती नहीं है। हम देवी–देवता बनते हैं तो हमारे में गुण भी दैवी होना चाहिए। आपे ही दिल अंदर आवेगा हमारा भोजन तो बिल्कुल शुद्ध होना चाहिए। पूछने का थोड़े ही रहता है कि यह .....खाना छोडूं या नहीं? समझते हैं हम देवता बनने वाले हैं तो वह दैवी गुण धारण करनी है। देवताओं को ऐसे अशुद्ध चीज़ का भोग थोड़े ही लगाया जाता है। यह तो आपे ही छोड़ना पड़े। अगर लाचारी मेस आदि में खाना पड़ता है इसके लिए भी बाबा ने समझा दिया है। बाबा हर बात मुरली में समझा ;देतेद्ध हैं। मेस आदि में खाना पड़े, तुम याद में रह खाओ तो असर न होगा। सिवा याद की यात्रा और कोई उपाय नहीं। बाप समझाते हैं मुख्य बात ही है कि पतित से पावन होना है। रावण राज्य में सभी मनुष्य पतित हैं ना। बाप कहते हैं यह काम महाशत्रु है। आदि,मध्य,अंत दुःख देने वाला है। बाप पूछते पतित तो नहीं हुए हो। पापों का सफाई का रास्ता भी बताते हैं। वह तो एक ही रास्ता है। दूसरा कोई

रास्ता होता नहीं। पावन बनने का दूसरा कोई रास्ता जंचता है? अगर कोई समझते हैं हां पावन बनने का और कोई रास्ता है तो बाबा को लिख भेजें ;परंतु हो नहीं सकता। गीता से ही बाप ने पतित से पावन बनाया है। गीता का युग भी यह है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही तुम यह राजयोग सीख पुरुषोत्तम बनते हो। दूसरा कोई शास्त्र है नहीं। संगमयुग भी जरूर चाहिए। सर्व का सदगति दाता पतित–पावन भी एक को कहा जाता है। बच्चे समझते हैं वह बाप हमको पढ़ाते हैं। फिर आधा कल्प रावण राज्य होता ही नहीं, जो पाप बने। भल सीढ़ी नीचे उतरते ही हैं ;परंतु पाप नहीं होते। पुरानी दुनियां होती है तो उसमें हम रहने वाले भी पुराने होते जाते हैं। कलायें तो कम होती हैं ना। पहले 16कला ,फिर 14कला। सतयुग से त्रेता में जरूर थोड़ा सुख कम होगा। तुम्हारा धर्म पहले सुख भोगता है। पीछे पिछाड़ी में दुःख होता है। दूसरे धर्म वाले को शुरू में कोई इतना सुख नहीं होता। जब धर्म की बहुत वृद्धि हो राजाई स्थापन हो तब सुख हो। होंगे ही थोड़े तो सुख क्या भोगेंगे? अभी देखते हो वह अपने को कितना सुखी समझते हैं। कहते हैं स्वर्ग तो अभी है। आगे यह बिजली आदि थोड़े ही थी। भल इस समय उन्हों का राज्य है ;परंतु कहेंगे तो कलियुग ना। यह हुनर इन्हों का अब निकला है। पहले2 तो विलायत में इन्वेंशन होती है। साइंस घमंडी है ना। तो वह जैसे अपने स्वर्ग से भेंट करते हैं। माया का भी पाम्प है ना। कितना भभका है। फिर इन भभके से विनाश भी करेंगे। यह है पिछाड़ी। अंत का मेला है। कहते हैं ना ''मेला मता ,माल खता''। जब साइंस बहुत जोर हो जावेगा तो फिर यह सब खतम हो जावेंगे। रावण का माल सारा खतम हो जावेगा। एण्ड हो जावेगी। फिर नई दुनिया होगी। इन आंखों से जो कुछ माल–मिल्कियत देखते हो वह रहने का नहीं है। सभी आत्माएं नीचे आवेंगे। बहुत बड़ा मेला हो जावेगा। फिर यह पुरानी दुनियां का जो कुछ देखते हो यह खप जावेगी अर्थात् विनाश हो जावेगी। फिर तुमको नया मिल जावेगा। तुम्हारी आत्मा भी नई शरीर भी नया मिल जावेगा। वह है ही सुख की दुनियां। वहां और कोई धर्म न होगा। पुरानी दुनियां ही नहीं होगी। तुम अभी नई दुनियां के लिए पढ़ते हो। स्कूल में तो मर्तबे होते हैं ना। धर्म में मर्तबे की बात नहीं होती। तुम तो इस पढ़ाई से राज्य लेते हो। पढ़ाई में नम्बरवार होते हैं। पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है। तुम जानते हो पुरानी दुनियां विनाश हो जावेगा। नई दुनियां की स्थापना हो जावेगी। तो बचेंगे वह देखेंगे और वर्णन भी कर सकेंगे। बाकी हम बचे हैं। कुछ रावण सम्प्रदाय के और कुछ राम सम्प्रदाय के होंगे। रावण सम्प्रदाय के तो फिर आवेंगे नहीं। वह तो फिर बिल्कुल पिछाड़ी में आवेंगे। तुम बिल्कुल नये और वह बिल्कुल पुराने। नये यहां रहेंगे बाकी सब चले जावेंगे। सतयुग–त्रेता में आवेंगे नहीं। कमाई ही नहीं की। यह सब बातें आगे चलकर समझते रहेंगे। अभी टाइम पड़ा है। बाबा और भी प्वाइंट्स बताते रहेंगे। अभी तुम समझते हो स्वर्ग फिर कैसे होगा। हीरे–जवाहर आदि कहां से आवेंगे। सतयुग में थे तो जरूर ना। जैसे थे वैसे ही फिर होंगे। अभी यह खयाल नहीं करते। इतने जवाहर–हीरे आदि कहां से आवेंगे? नई दुनियां में सब कुछ होगा जरूर। आगे चलकर यह भी सब पिछाड़ी की बातें तुम समझते जावेंगे। दुनियां कैसे बदलती है। सोना,हीरे,जवाहर आदि सब कहां से आते हैं? आगे चल तुम समझ लेंगे। स्टुडेंट की बुद्धि में सारा दिन पढ़ाई ही रहती है। और फिर घर का काम आदि भी करते हैं। तुम भी सारा दिन पढ़ाई आदि ही तो नहीं करते हो। और भी काम करते हो। अनेक प्रकार की सर्विस होती है। यह भी तुम बच्चे जानते हो स्वर्ग में बहुत स्वच्छता होगी। तुम विष्णुपुरी में जाने लिए कितने पवित्र बनते हो। पुरुषार्थ कर रहे हो। युक्ति भी बहुत सहज है। तुम किसको भी समझा सकते हो। यह ;ल.ना.द्ध 84जन्म जरूर लेंगे। जो सूर्यवंशी में आये होंगे वह ही 84जन्म लेंगे। पिछाड़ी वाले भी आते रहेंगे। सब इकट्ठे तो नहीं आवेंगे। धीरे2 सतयुग–त्रेता में आते रहेंगे। नम्बरवार जैसे रहेंगे वैसे आते रहेंगे। तुमने देखा है स्टार्स कैसे गिरते हैं। देखने में आता है ना। आत्मा को तो कोई देख नहीं सकते। वह स्टार्स आदि को जानना वह तो नजुमत की बातें हो गईं। इन बातों से हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। हम इस दुनियां की सभी बातें भूल जाते हैं। फिर

भी पुरुषार्थ करते हैं पावन बनने का। और कोई बातों से तुम्हारा कनेक्शन नहीं है। पावन दुनियां में जाने का एक ही रास्ता है। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। हमको एक ही वशीकरण मंत्र मिला हुआ है। मन्मनाभव। बस। एक बाप को ही याद करते हैं। अभी टाइम पड़ा हुआ है। इसलिए घड़ी2 भूल जाते हैं। नहीं तो बाबा युक्ति बहुत सहज बताते हैं, जो 5000वर्ष पहले भी बतलाई थी। 5000वर्ष पहले भी कहा था कि अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह प्रैक्टिस की है जो फिर रिपीट करते हैं। बाप ने कल्प पहले भी ऐसे ही पावन किया था। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ पावन बनने लिए बाप को याद करो। पतित बनने में तुमको 5000वर्ष लगे हैं। कला जड़ी2 कमती होती गई। सारी सीढ़ी उतरने में 5000वर्ष लगे हैं। अब बाप फिर जम्प दिलाते हैं। बाप को याद न करेंगे तो काल खा जावेगा। बाप ने काम तो बहुत अच्छा दिया है। मुझे याद करते रहो। मूल बात ही यह है। जिससे ही विकर्म विनाश होंगे। और कोई उपाय है नहीं। गंगा तो पतित–पावनी नहीं है। पावन बनने की मुख्य बातें हैं ही याद की यात्रा। बच्चे जानते हैं इसमें टाइम लगता है। घड़ी2 भूल जाते हो। इसलिए चार्ट रखते हो। दैवी गुणों को भी देखना है। समझ तो अभी मिली है। यहां जो आते हैं उनको एकदम पत्थर बुद्धि भी नहीं कहेंगे। कुछ न कुछ थोड़ा बहुत ठीक बुद्धि है। सुधरते हैं तब ही स्वर्ग में जाते हैं, नहीं तो सजा खावेंगे। बेइज्जती होगी। पद भी कम हो जावेगा। बाप समझाते तो बहुत हैं। गीता का रचता कौन है, इसमें ही बड़ी भारी भूल हुई है। और शास्त्र तो ढेर हैं। भारतवासियों का तो एक ही शास्त्र हैं। सारी दुनियां जानती है भारत का एक ही शास्त्र गीता है। उसको पढ़ाने वाला टीचर एक है,जिससे तुम देवता बनते हो। दैवी गुण भी जरूर धारण करनी है। ड्रामा अनुसार तुमने जैसे पुरुषार्थ किया था करते रहते हो। उसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। साक्षी हो देखा जाता है। हर एक का कैसा पुरुषार्थ है। समझ तो सकते हैं ना। जो अनन्य अच्छे बच्चे हैं वह झट बतावेंगे तुम्हारा पुरुषार्थ मीडियम है। तुम्हारा बहुत कम देखने में आता है। पुरुषार्थ की भी मार्क्स होती है ना। पढ़ाई से सारा पता पड़ जाता है। खुद भी समझते हैं हम कम पढ़े हैं। यह स्कूल है। बाप ही मनुष्य से देवता बनाते हैं। मनुष्य से देवता तब बनते हैं जब देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। पुरानी दुनियां का विनाश नई दुनियां की स्थापना होगी तब ही बाप आवेंगे। यह विनाश स्थापना हर 5000वर्ष बाद होता ही रहता है। ;टोटलद्ध विनाश तो होगा ना। सतयुग में इतने थोड़े ही होंगे। तो जरूर विनाश होगा ना। इसलिए बाप पुरुषार्थ कराते हैं। पढ़ेंगे कम ,याद कम करेंगे तो दर्जा भी कम पावेंगे। दर्जे तो नम्बरवार बहुत होते हैं। हमारे पास जास्ती पढ़ने ,पढ़ाने वाले कौन हैं, वह समझ तो सकते हो ना। लिस्ट भी तुम निकाल सकते हो। कुमारका के बदले,मनोहर के बदले दूसरा कोई नाम दे सकेंगे?समझते हैं मनोहर, गंगे अच्छी सर्विसेबुल है तो जरूर अच्छे ही पद पावेंगे। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। बाबा से कोई पूछे तो बाबा झट बता देंगे। बाबा को तो सबूत चाहिए ना। सर्विसेबुल को ही याद किया जाता है। नाम भी उन्हों के ही लिखते हैं कि फलानी को भेजो। समझ तो सकते हैं ना हम पाउंड बनेंगे या .....बनेंगे.....पेनी बनेंगे। बुद्धि भी कहती है हम सर्विस तो कुछ करते नहीं हैं। आत्मा कहती है मेरी बुद्धि कम है। ;हरद्ध एक समझ सकते हैं। देवी–देवता धर्म की राजधानी स्थापन हो रही है। यह बर्थ पाउंड है, यह बर्थ पेनी...। बाप ही जानते हैं यह प्रजा में कितने साहुकार बनेंगे। बाकी माला के दानों में कौन2 हैं वह तुम भी समझ सकते हो। प्रजा में कौन साहुकार बनेंगे, कौन क्या बनेंगे वह तुम नहीं समझ सकेंगे। बहुत2 वास्ट डिफ्रेंस ....। पुरुषार्थ तो करना चाहिए अच्छा बनने का। पुरुषार्थ किसको कहा जाता है वह भी बहुतों के समझ में नहीं आता। अच्छा, मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बाप का नमस्ते। अच्छा ✸✸